

سُورَةُ الْاِنْشِقَاقِ

Surah 84 — Al-Inshiqaaq (The Splitting Open) • Meccan • 25 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِذَا السَّمَاءُ أَنْشَقَّتْ

जब आसमान फट जाएगा

2

وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ

और अपने परवरदिगार का हुक्म बजा लाएगा और उसे वाजिब भी यही है

3

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ

और जब ज़मीन (बराबर करके) तान दी जाएगी

4

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ

और जो कुछ उसमें है उगल देगी और बिल्कुल खाली हो जाएगी

5

وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ

और अपने परवरदिगार का हुक्म बजा लाएगी

6

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا ۚ فَمُلْئِقِيهِ

और उस पर लाज़िम भी यही है (तो क़यामत आ जाएगी) ऐ इन्सान तू अपने परवरदिगार की हुज़ूरी की कोशिश करता है

7

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ ۖ بِيَمِينِهِ ۖ

तो तू (एक न एक दिन) उसके सामने हाज़िर होगा फिर (उस दिन) जिसका नामाए आमाल उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा

8

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا

उससे तो हिसाब आसान तरीके से लिया जाएगा

9

وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا

और (फिर) वह अपने (मोमिनीन के) कबीले की तरफ खुश खुश पलटेगा

10

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ

लेकिन जिस शख्स को उसका नामए आमल उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा

11

فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا

वह तो मौत की दुआ करेगा

12

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا

और जहन्नुम वासिल होगा

13

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا

ये शख्स तो अपने लड़के बालों में मस्त रहता था

14

إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّنْ يَحُورَ

और समझता था कि कभी (खुदा की तरफ) फिर कर जाएगा ही नहीं

15

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا

हाँ उसका परवरदिगार यकीनी उसको देख भाल कर रहा है

16

فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ

तो मुझे शाम की मुखर्ी की कसम

17

وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ

और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें ये ढाँक लेती है

18

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ

और चाँद की जब पूरा हो जाए

19

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ^१

कि तुम लोग ज़रूर एक सख्ती के बाद दूसरी सख्ती में फँसोगे

20

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

तो उन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं ईमान नहीं लाते

21

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ^१

और जब उनके सामने कुरान पढ़ा जाता है तो (खुदा का) सजदा नहीं करते (21) (सजदा)

22

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا^१ يُكْذِبُونَ

बल्कि काफ़िर लोग तो (और उसे) झुठलाते हैं

23

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ

और जो बातें ये लोग अपने दिलों में छिपाते हैं खुदा उसे खूब जानता है

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

तो (ऐ रसूल) उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो

إِلَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्चे काम किए उनके लिए बेइन्तिहा अज़्र (व सवाब है)